The Heart

When this heart
Flies off through the window with the gusty wind,
And escapes away,
Mixes with those crowd of lads;
In the knee length mudwater
And searches for the small fishes,

When this heart
Wears on the waist
A checkered towel blue and red,
Sets a trap in the paddy firm
And waits,
Gets inside the chest length water
Wrapping up the cloth
As a village girl –
Removes the water hyacinth with bamboo log,

When this heart
Watches the train boggies with awe,
Closely along the side of the paddy field,
Runs real fast,
And crosses the fields, ponds and forests
And
Runs behind the torn kites–
When this heart
Craves for a can of soaked rice and onions
In the leisure of busy afternoons,
Then,
This heart
Draws a hut, its doors and windows
In the sketch book –
Then
This heart

Runs out of the window,
And takes a pause behind the gusty wind,
And gets mad
In the pages of the sketch book.

মন

যখন এ মন—
একছুটে জানালা খুলে দমকা হাওয়ায় হাওয়ায়
পালিয়ে বেড়ায়,
এক হাঁটু কাদা পাঁকে
ছিপছিপে একপাল ছেলের দলে মিশে যায়
আর কুঁচোমাছ খোঁজে,

যখন এ মন—
কোমরে লাল নীল ছোপ গামছা বেঁধে
ধানক্ষেতে ফাঁস-জাল পেতে
গালে হাত দিয়ে বসে,
একবুক জলে নেমে
হাঁটুর ওপর শাড়ী-সায়া ভাঁজ কোরে
কোমরে গুঁজে নিয়ে
গাঁয়ের মেয়ে হয়ে
বাঁশ দিয়ে কচুরিপানা সরায়,

যখন এ মন—
ধানের গোলার পাশ ঘেঁষে
অবাক চোখে ট্রেনের কামরা দেখে,
ছুট ছুট একছুটে
মাঠ, ঘাট হোগলা বন পেরোয়
আর
ল্যাজ লাগানো ভোকাট্টা ঘুড়ির পেছনে
দৌড়ে বেড়ায়,
যখন এ মন—
ভরদুপুরে কাজের ফাঁকে
বটের ছায়ায়
এক ক্যান পান্তা আর পেঁয়াজ চায়,

তখন
এ মন—
ড্রইং খাতায় কুঁড়েঘর, তার দরজা
আর একখোপ জানালা আঁকে,
তখন
এ মন—
একছুটে জানালা খুলে
দমকা হাওয়ার পাশে থমকে দাঁড়ায়
আর দাপিয়ে বেড়ায়
ড্রইং খাতায়
পাতায় পাতায়।

मन

जब यह मन,
एक ही दौड़ में खिड़की खोल ठंडी हवाओं के झोंकों के संग,
उड़ता फिरता है,
घुटनों तक जमे कीचड़ के दलदल में,
घुलमिल जाता है लड़कों के झुण्ड के संग,
और मछलियों को ढूंढ़ता फिरता है।
जब ये मन,
कमर में लाल-नील लंगोटी बाँधकर,
धान के खेतों में जाल बिछाकर,
गाल में हाथ डाले बैठकर,
छाती तक फैले पानी में उतारकर,
साड़ी साये को घुटनों के ऊपर उठाकर
कमर में बाँधकर
गांव की बाला बन
बांस से जलकुम्भी को साफ़ करता फिरता है।
जब यह मन,
धान के गोलों से चिपककर खड़े होकर
ट्रैन के डिब्बों को हैरानी भरी आँखों से देखता है,
और एक ही बार में भागता हुआ
मैदान,घाटियों,वन-जंगलों को पार करता और डोर से टूटती हुई पतंग के पीछे दौड़ता फिरता है,
जब यह मन,
भरी दोपहरी में काम के बीच में बरगत की छांव तले
एक कैन में बासीभात और पियाज मांगता है।
तब यह मन
ड्राइंग कॉपी में झोपडी,उसके दरवाजे और खिड़कियां बनाता है।
तब यह मन
एक ही बार में दौड़कर
खिड़की खोल
हवा के झोंकों के बगल में आकर
थम जाता है।
और जोर जोर से चलता फिरता है ,
ड्राइंग कॉपी के हर पन्ने में।